RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-04
Issue-05
May-2019

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[UGC Listed Journal]

मन्नू भण्डारी के उपन्यासें में सामाजिक एवं सांस्कृतिक चेतना के विभिन्न रूपों का चित्रण, उपलब्धियॉ एवं सीमाएँ

[1]लक्ष्मीदेवी और [2]डॉ. ब्रजलता शर्मा

[1]पीएचडी शोध छात्रा, हिंदी विभाग, हिमालयन गढ़वाल विश्वविद्यालय,पौढ़ी, उत्तराखण्ड
[2]सह – आचार्य, हिंदी विभाग, हिमालयन गढ़वाल विश्वविद्यालय, पौढ़ी, उत्तराखण्ड

ARTICLE DETAILS

Article History
Published Online: 25 May 2019

Keywords
अन्यत्र–अन्य कहीं , दुर्लभ– कठिन , विद्रूपता– कठिनाई , मूल्यहीनता– मूल्य से रहित , मर्मस्पर्शी– संवेदनशील , द्योतक–परिचायक , घटक– अवयव, तत्व , भाजन– पात्र, कतिपय– कुछ ।

ABSTRACT

स्वातंत्रयोत्तर हिन्दी उपन्यास लेखिकाओं में मन्नू भण्डारी का नाम शीर्ष स्थानीय है।सामाजिक एवं सांस्कृतिक चेतना का जो स्वस्थ एवं प्रखर रूप मन्नू भण्डारी के उपन्यासों में व्यक्त हुआ है, वह आज तक अन्यत्र दुर्लभ है। राजनीति,सामाजिक, सांस्कृतिक तथा आर्थिक विद्रूपताओं से ग्रस्त समाज का यथातथ्य वर्णन प्रस्तुत करने में मन्नू जी सर्वथा समर्थ सिद्ध हुई हैं। 'महाभोज' 'आपका बन्टी', स्वामी तथा कलवा' उनकी औपन्यासिक कृतियॉ हैं। महाभोज उपन्यास एक हरिजन युवक की निर्मम हत्या और उससे बनने वाले परिवेश का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत करता है। साथ ही साथ समसामयिक राजनीतिक माहोल की दुविधापूर्ण झकझोर देने वाली सच्चाई का भी चित्रण करता है। गरीबों के लिए झूठे ऑसू बहाने में निपुण मगरमच्छनुमा नेताओं द्वारा लगाये जाने वाले खोखलों नारों के कुत्सित षडयंत्रों और दमघोटू स्थितियों का अटल निर्भीकता के साथ चित्रण किया गया है। है। इस दृष्टि से मन्नू भण्डारी का यह उपन्यास अत्यन्त सशक्त है। अपने

समर्पण में ही लेखिका ने सामाजिक व सांस्कृतिक चेतना की प्रखर अभिव्यक्ति की है। ''दुर्निवार सम्मोहन भरी उस खतरनाक लपकती अग्नि लीक लिए जो बिसू और बिन्दा तक ही नहीं रूकी रहती ..... । मन्नू

भण्डारी की सजग लेखनी ने सामाजिक एवं सांस्कृतिक समस्याओं को वाणी दी है। आज की ज्वलन्त सामाजिक समस्याएँ राजनीति से जुड़ी हैं। लेखिका ने अभिनिवेशपूर्वक राजनीति के गिरगिटी चरित्र को उजागर किया है। ''आज का भारतीय जीवन एक अभूतपूर्व मूल्यहीनता, अर्थहीनता और सड़ॉध का शिकार हो गया है। मन्नू भण्डारी ने महाभोज में इस सड़ॉध का प्रत्ययकारी और मर्मस्पर्शी चित्रण किया है।''

मन्नू भण्डारी ने समाज के निर्बल के प्रति अपनी वैचारिक सहानुभूति प्रकट की है,जो उनकी प्रखर सामाजिक एवं सांस्कृतिक चेतना का द्योतक है दलित समस्या को यथार्थ मनोवैज्ञानिक धरातल पर रख कर उसका हृद्यस्पर्शी चित्रण लेखिका ने साफल्यपूर्वक किया है।

नारी हमारे समाज की मुख्य घटक है। उसके स्वतंत्र अस्तित्व को स्वीकार करके ही समाज उन्नति कर सकता है। किन्तु व्यैक्तिक स्वतंत्रता और अह ंके कारण सामंजस्य असंभव है। स्त्री पुरूष जब परिवार में प्रेम पूर्वक रहते हैं तो एक स्वर्गीय वातावरण का निर्माण करते हैं। किन्तु यही परिवार जब विघटित होने लगता है तब वह अभिशप्त होकर नारकीय यातना के दौर से गुजरने लगता है। व्यक्ति मन की टूटन को सामाजिक एवं सांस्कृतिक समस्या का रूप लेखिका ने दिया है।माता–पिता के अपसी संघर्ष में सन्तान का कोई दोष नहीं होता,फिर भी सबसे अधिक पीड़ा का भाजन वही बनता है। यद्यपि लेखिका ने अपने औपन्यासिक कृतित्व द्वारा सामाजिक एवं सांस्कृतिक समस्याओं को उजागर किया है। किन्तु कतिपय पात्रों की विश्वसनीयता संदेहास्पद हो उठती है। अक्सर छोटे कथानक को अधिक विस्तार दिया गया है। कतिपय विद्वानों का ऐसा मानना है। सार रूप में मन्नू भण्डारी की सामाजि एवं सांस्कृतिक चेतना का स्वर प्रेरक और सामयिक है।

परिचय

स्वातंत्रयोत्तर हिन्दी उपन्यास लेखिकाओं में मन्नू भण्डारी का नाम शीर्ष स्थानीय है।सामाजिक एवं सांस्कृतिक चेतना का जो स्वस्थ एवं प्रखर रूप मन्नू भण्डारी के उपन्यासों में व्यक्त हुआ है, वह आज तक अन्यत्र दुर्लभ है। राजनीति,सामाजिक, सांस्कृतिक तथा आर्थिक विद्रूपताओं से ग्रस्त समाज का यथातथ्य वर्णन प्रस्तुत करने में मन्नू जी सर्वथा समर्थ सिद्ध हुई हैं। 'महाभोज' 'आपका बन्टी', स्वामी तथा कलवा' उनकी औपन्यासिक कृतियॉ हैं।यहॉ उक्त उपन्यासें के माध्यम से उनकी सामाजिक एवं सांस्कृतिक चेतना के विभिन्न रूपों का अध्ययन प्रस्तुत किया जाता है।

1–महाभोज 1::

महाभोज उपन्यास एक हरिजन युवक की निर्मम हत्या और उससे बनने वाले परिवेश का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत करता है।साथ ही साथ समसामयिक राजनीतिक माहोल की दुविधापूर्ण झकझोर देने वाली सच्चाई का भी चित्रण करता है। इसमें रीब खेतिहर मजदूर और गॉव में रहने वाली अधिकॉश जनता के निर्मम शोषण पर तुली राजनीति के दोगले अगुओं, उनके पिट्ठुओं और चमचों का यथार्थ चित्रांकन हुआ है। गरीबों के लिए झूठे ऑसू बहाने में निपुण मगरमच्छनुमा नेताओं द्वारा लगाये जाने वाले खोखलों नारों के कुत्सित षडयंत्रों और दमघोटू स्थितियों का अटल निर्भीकता के साथ चित्रण किया गया है। 1

RRIJM 2015, All Rights Reserved

सरोहा गॉव शहर से दूर नहीं है। उस गॉव में रहने वाले अधिकॉश लोग निम्न वर्ग के हैं। जिनका शोषण सदियों से होता आया है। अभी कुछ दिन पहले हरिजनों के टोले में भूस्वामियों में दबंग जोरावर सिंह ने आग लगवा दी थी।विसेसर ने जोरावर सिंह के खिलाफ मोर्चाबन्दी शुरू कर दी।उसने बहुत से सबूत जोरावर सिंह के विरूद्ध जमा कर लिये थे। जोरावर सिंह ने अपने आदमियों से बिसेसर को चाय में ज़हर मिलवा कर पिलवा दिया और उसकी जीवनलीला समाप्त हो गयी। बिसेसर की लाश राजनीति के गिद्धों के लिये महाभोज बन गयी।विधान सभा का एक उपचुनाव सिर पर है।वर्तमान मुख्यमंत्री दा साहब की प्रतिष्ठा दॉव पर लगी है।एक तरफ उन्हें पार्टी के भीतर सिर उठाते हुए असंन्तुष्टों का दबाब झेलना पड़ रहा है और और दूसरी ओर विपक्ष के सबल प्रतिद्वन्दी शुक्ल जी का जो दस वर्षों तक प्रदेश के मुख्यमंत्री चुके रह हैं।दोनों पक्ष गॉव वालो को रिझाने में लगे है।दोनों बिसेसर की मौत को भुनाना चाहते हैं।

1–तेरहवॉ संस्करण–1989, राधाकृष्ण प्रकाशन अंसारी रोड,दरियागंज,नई दिल्ली।

जोरावर सिंह दा साहब का मुँह लगा आदमी है। वह चुनाव में सब तरह से दा साहब की मदद करता है। इसलिये वह बिसेसर की हत्या को आत्म हत्या में बदलवाने के लिये प्रेस और पुलिस पर दबाब डालते हैं। प्रेस वाला कागज़ का दूना कोटा पाकर दा साहब की इच्छापूर्ति में जी जान से जुट जाता है। पुलिस एस0 पी0 सक्सेना को तफतीश के लिये सिरोहा भेजा जाता है। निष्पक्ष एस0 पी0 सबके बयान लेकर यह सिद्ध करता है कि बिसेसर की हत्या हुई है। फलस्वरूप उसकी सेवापंजिका में प्रतिकूल टिप्पणी कर उसे मुउत्तल कर दिया जाता है।

बिसेसर का एक पक्का दोस्त बिन्दा है।उसकी पत्नि रूकमा बिसेसर की शिष्या है। बिन्दा आग उगलता है।अपने शब्दों में उसे वर्तमान व्यवस्था पर जरा भी विश्वास नहीं है। दा साहब के इशारे पर एक कहानी गढ़ी जाती है कि बिसेसर और रूकमा के प्रेम संबंध से नाराज बिन्दा ने अपने दोस्त बिसेसर को ज़हर देकर मार डाला।पुलिस बिन्दा पर अमानुषिक अत्याचार कर उसे सुन्न कर देती है।तब क्या सारा प्रयास बेकार चला गया ? नहीं बिन्दा द्वारा जुटाये गये प्रमाणों को लेकर रूकमा के साथ एस0 पी0 सक्सेना दिल्ली को प्रस्थान कर जाते हैं। यहीं उपन्यास समाप्त हो जाता है।

महाभोज में सामाजिक–सांकृतिक चेतना के विभिन्न रूप

सामाजिक–सांस्कृतिक का तात्पर्य प्रगतिशील शक्तियों की पक्षधरता तथा प्रतिगामी शक्तियों के प्रति विरोध व्यक्त करना होता है। सदियों से चली आ रही जीर्ण–शीर्ण सामाजिक एवं सांस्कृतिक रूढ़ियों का प्रतिकार कर मानवीय संबंधों की नवीन व्यवस्था प्रस्तुत करना ही सामाजिक व सांज्ञकृतिक चेतना का भास्कर रूप है।इस दृष्टि से मन्नू भण्डारी का यह उपन्यास अत्यन्त सशक्त है।अपने समर्पण में ही लेखिका ने सामाजिक व सांस्कृतिक चेतना की प्रखर अभिव्यक्ति की है। ''दर्निवार सम्मोहन भरी उस खतरनाक लपकती अग्नि लीक लिए जो बिसू और बिन्दा तक ही नहीं रूकी रहती .....।''1

भण्डारी के शब्दों में–'अपने व्यक्तिगत दुःख–दर्द,अन्तर्द्वन्द्व या आन्तरिक नाटक को देखना बहुत महत्तवपूर्ण सुखद आश्वस्तिदायक तो मुझे भी लगता है, मगर जब घर में आग लगी हो तो सिर्फ अपने अन्तर्जगत में बने रहना,क्या? खुद ही अप्रासंगिक, हास्यास्पद और किसी हद तक अश्लील नहीं लगता? सम्भवतः इस प्रतिक्रियावादी शक्तियाी क्रान्ति को विफल करने की जी जान से कोशिश करती हैं।परन्तु क्रान्ति,कोसामाजिक विद्रोह को दबाने की जितनी ही कोशिश की जाती है, वह उतनी ही प्रबल होकर उभरती है। उस विद्रोह के संवाहक भले ही बदलते रहें, लेकिन वह आग निरन्तर फैलती जाती है।

1– महाभोज ,पृ0 सं0–5

मन्नू भण्डारी का सामाजिक व सांस्कृतिक सरोकार उनके आत्मकथ्य से भी प्रकट होता है। समाज के दुःख दर्द उसे अपने से लगते हैं।तब वह अपनी व्यक्तिगत असुविधाओं की परवाह न करते हुए उस दिशा में प्रयासरत होता है जिधर से आशा की किरण की संभावना होती है। मन्नू उपन्यास की रचना के पीछे यही प्रश्न रहा

2–आपका बंटी : :

मन्नू भण्डारी द्वारा लिखित यह उपन्यास सामाजकि एवं सांस्कृतिक सम्बन्धो, उनमें आयीं विकृतियों तथा उनसे उपजी समस्याओं को प्रतिबिम्बित करता है।लेखिका ने सजग होकर वैवाहिक संबंधो, विवाहेतर संबंधों, तलाक तथा सर्वाधिक पीड़ित सन्तान के मानसिक द्वन्द्वों को वाणी दी है।

अजय और शकुन दोनों पति पत्नि हैं।बन्टी उनका एकमात्र पुत्र है। अजय के विवाहेत्तर प्रेम से खिन्न शकुन उससे अलग हो जाती है। वह एक कॉलेज की प्राचार्या है। प्रशासनिक और दैनिक कार्यों में व्यस्त रहने पर भी उसकी जीवन पीड़ा समाप्त नहीं होती।वह बंटी के लालन पालन में भी कोई कसर नहीं छोड़ती।किन्तु बंटी पितृ स्नेह पाने के लिए तड़पता रहता है। अजय शकुन से तलाक लेकर एक अन्य युवती मीरा से शादी कर लेता है।शकुन स्वतंत्र व्यकितत्व वाली उन्मुक्त नारी है।वह भी एक डॉक्टर से शादी कर लेती है। किन्तु बंटी का जीवन उदास ही रहता है।

इस प्रकार उसका खण्डित जीवन अत्यन्त नीरस और विषम हो जाता है। समकालीन भारतीय नारी और उसकी पारिवारिक परिस्थतियों से प्रभावित बच्चे की मनःस्थितियों का चित्रण प्रस्तुत उपन्यास में बखूबी हुआ है।

RRIJM 2015, All Rights Reserved

आपका बंटी में सामाजिक एवं सांस्कृतिक चेतना के विविध रूपः प्रत्येक रचना की प्रस्तुति के पीछे रचनाकार का एक उद्देश्य निहित होता है। रचनाकार स्वंय ही जब अपना उद्देश्य प्रकट कर देता है,तब पाठकों–आलोचकों का कार्य सरल हो जाता है।मन्नू भण्डारी का उपन्यास आपका बंटी सामाजि एवं सांस्कृतिक सरोकार को मुखरित करने वाला उपन्यास है।इसमें व्यक्ति चेतना को समाज चेतना से जोड़कर देखने का प्रयास है।व्यक्ति समाज का एक घोर घटक है।व्यक्ति के भीतर की टूटन कहीं नकहीं समाज को भी आहत करती है।लेखिका की उक्त वृत्ति का उद्देश्य एक सामाजिक, सांस्कृतिक समस्या को उजागर करनाहै।'' 1

1–मन्नूभणडारी –महाभोज, पृ0 सं0 6

उन्हीं के शब्दों में–भावना के स्तर पर उद्वेलित और विगलित करने वाला बंटी जब मेरे सामने एक भयावह सामाजिक समस्या के रूप में आया तो मेरी दृष्टि अनायास ही उसके जन्म देने, बनाने या बिगाड़ने वाले सारे सूत्रों, स्रोतों और सन्दर्भों की खोज और विश्लेषण को दौड़ पड़ी।1

प्रस्तुत उपन्यास का उद्देश्य पारिवारिक त्रासदियों का चित्रण कर बंटी जैसे बच्चों के प्रति करूणा या सहानुभूति प्राप्त करना मात्र नहीं है। इसके अतिरिक्त इसे एक व्यापक सामाजिक एवं सांस्कृतिक समस्या कका रूप देकर व्यक्ति और समाज के अपने दायित्वों के प्रति सजग करना भी है।व्यक्ति का आत्म विघटन अन्ततः समाज और संस्कृति को भी विघटित कर डालेगा, इस चेतना का विस्तार भी इस साहित्यिक कृति का अभीप्सित लक्ष्य है। लेखिका के अनुसार बहरहाल, बंटी की यह यात्रा चाहे परिवार की संश्लिष्ट इकाई से टूटकर क्रमशः अकेले, जड़हीन,फालतू और अनचाहे होते जाने की रही हो, लेकिन मेरे लिये यह यात्रा भावुकता–करूणा से गुजरकर सामाजिक यंत्रणा और सामाजिक प्रश्न आकुलता की रही है।जीते–जागते बंटी का तिल–तिल करके समाज की बेनाम इकाई भर बनते चले जाना यदि पाठक को सिर्फ अन्प्रविगलित ही करता है तो मैं समझूँगी कि यह पत्र सही पते पर नहीं पहुँचा है।2''

मनुष्य एक सामाजिक जीव होने के नाते अधिक समय तक अकेला नहीं रह सकता। यहॉ अकेले का मतलब एकान्त से नहीं सामाजिक सम्बन्धों एवं सम्बन्धों की उष्मा से वंचित रहने से है। सम्बंधों की उष्मा के कारण ही हम सभी निश्चिन्त रहकर अपनी जीवन–चर्चा सम्पादित करते हैं।अपनों से, अपने घर से बहुत दूर जाकर व्यक्ति सहज नहीं रह पाता ।

यदि यह संबंध स्नेह से रिक्त हो जाते हैं तब व्यक्ति भीतर से रीता हो जाता है।फिर भी वह स्नेह की तलाश करने से रूकता नहीं।इस उपन्यास की एक प्रमुख अकेलेपन से मुक्ति पाने के लिए वयक्ति द्वारा किये गये प्रयासों की प्रश्नवाचकता है। जैसे–जैसे हम तथाकथित आधुनिकता के मोह–पाश में बॅधते चले जाते हैं। जीवन एक विडम्बडनापूर्ण त्रासदी बनकर रह जाता है। आपका बंटी की मुख्य समस्या विभिन्न स्तरों पर अकेलेपन से निस्तार पाने और जीवन के साथ सामंस्य स्थापित करने की अकुलाहट है। आज के मनुष्य का आन्तरिक संकअ इस उपन्यास में बड़ी सफलता के साथ उभरा है।..... आज के जीवन में व्याप्त रिक्तता, उदासी और परिस्थितिजन्य विवशता के कारण भीतर ही भीतर टूटते चले जाने की नियति व्यापक सामाजिक संदर्भों में अभिव्यक्ति हुई है।''3

1–आपका बंटी, 6 –2–आपका बंटी पृ0 6
3–हिन्दी उपन्यास, डा0 सुरेश सिन्हा1972,पृ0374

महाभोज और आपका बंटी ये दोनों उपन्यास ही मन्नू भण्डारी के मौलिक उपन्यास हैं। इन्ही में लेख्खिा की सामाजिक एवं सांस्कृतिक चेतना का प्रसार उल्लेख्य है। महाभोज मुख्य रूप से राजनीतिक कपटाचार का पर्दाफाश करता है, समाज के दबंग प्रतिक्रियावादी तत्वों के प्रति आक्रोश जगाता है तथा दलितों–शोषितों के प्रति सहानुभूति पैदा करता है।

आपका बंटी व्यक्ति और समाज के विघटन की प्रक्रिया को रेखांकित करता है। अहं प्रबल विस्फोट के कारण परिवार टूट जाते हैंदम्पत्ति तलाक के लिए अभिशप्त होते हैं,और सर्वाधिक प्यार–दुलार का हकदार बच्चा ही सबसे अधिक उपेक्षित होता है।लेखिका का उद्देश्य बंटी के प्रति सहानुभूति मात्र नहींहै। वह एक भयंकर समाजिक समस्या को समाज के समक्ष प्रस्तुत करना चाहती है। साहित्यकार का उपदेश शान्ति सम्मत उपदेश होता है। व्यंजना के माध्यम से यह उपन्यास हमें वैसी परिस्थितियों से बचने की प्रेरणा देता है। अजय, शकुन, जोशी, बंटी आदि सभी पात्र रीते हैं और अपने खालीपन को भरने के लिए इधर–उधर भटकते हैं। किन्तु सहज जीवन प्रवाह के विपरीत चलकर कोई व्यक्ति लाभनही प्राप्त कर सकता है। लेखिका की सामाजिक दृष्टि ने समाज को डूबने से बचाने के लिए ही उक्त समस्या को उपन्यास के माध्यम से उठाया है।

उपलब्धियॉ ::

मन्नू भण्डारी की सजग लेखनी ने सामाजिक एवं सांस्कृतिक समस्याओं को वाणी दी है। आज की ज्वलन्त सामाजिक समस्याएॅ राजनीति से जुड़ी हैं।लेखिका ने अभिनिवेशपूर्वक राजनीति के गिरगिअभ चरित्र को उजागर किया है। ''आज का भारतीय जीवन एक अभूतपूर्व मूल्यहीनता, अर्थहीनता और सड़ॉध का शिकार हो गया है। मन्नू भण्डारी ने महाभोज में इस सड़ॉध का प्रत्ययकारी और मर्मस्पर्शी चित्रण किया है।''1

मन्नू भण्डारी ने समाज के निर्बल के प्रति अपनी वैचारिक सहानुभूति प्रकट की है,जो उनकी प्रखर सामाजिक एवं सांस्कृतिक चेतना का द्योतक है दलित समस्या को यथार्थ

मनोवैज्ञानिक धरातल पर रख कर उसका हृद्यस्पर्शी चित्रण लेखिका ने साफल्यपूर्वक किया है।

नारी हमारे समाज की मुख्य घटक है। उसके स्वतंत्र अस्तित्व को स्वीकार करके ही समाज उन्नति कर सकता है। किन्तु व्यैक्तिक स्वतंत्रता और अह ंके कारण सामंजस्य असंभव है। स्त्री पुरूष जब परिवार में प्रेम पूर्वक रहते हैं तो एक स्वर्गीय वातावरण का निर्माण करते हैं। किन्तु यही परिवार जब विघटित होने लगता है तब वह अभिशप्त होकर नारकीय यातना के दौर से गुजरने लगता है। व्यक्ति मन की टूटन को सामाजिक एवं सांस्कृतिक समस्या का रूप लेखिका ने दिया है।माता–पिता के अपसी संघर्ष में सन्तान का कोई दोष नहीं होता,फिर भी सबसे अधिक पीड़ा का भाजन वही बनता है।

सीमाएँ : :

यद्यपि लेखिका ने अपने औपन्यासिक कृतित्व द्वारा सामाजिक एवं सांस्कृतिक समस्याओं को उजागर किया है। किन्तु कतिपय पात्रों की विश्वसनीयता संदेहास्पद हो उठती है। अक्सर छोटे कथानक को अधिक विस्तार दिया गया है। कतिपय विद्वानों का ऐसा मानना है। सार रूप में मन्नू भण्डारी की सामाजि एवं सांस्कृतिक चेतना का स्वर प्रेरक और सामयिक है।

1–डा0 गोपालराय,समीक्षा–अंक–अक्तूबर–दिसम्बर, 1980 पृ0 33

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची –

1. महाभोज मन्नू भण्डारी राधाकृष्ण प्रकाशन दिल्ली, 2016
2. स्वामी मन्नू भण्डारी राधाकृष्ण प्रकाशन दिल्ली, 2016
3. आपका बंटी मन्नू भण्डारी राधाकृष्ण प्रकाशन दिल्ली, 2011
4. वृहत् भारतीय एवं पाश्चात्य वाक्शास्त्र डा0 सुरेश चन्द्र अग्रवाल 2018
5. हिन्दी साहित्य का वृहत् इतिहास भाग 8
6. हिन्दी उपन्यास डा0 सुरेश सिन्हा 1999
7. आरम्भकालीन उपन्यास लेखिकाएँ डा0 उर्मिला गुप्त
8. महिला उपन्यासकारों की रचनाओं में डा0 शीलप्रभा वर्मा भूमिका बदलते सन्दर्भ
9. तेहरवॉ संस्करण राधाकृष्ण प्रकाशन अंसारी रोड नई दिल्ली 2018
10. हिन्दी उपन्यास डा0 इन्द्रनाथ मदान
11. हिन्दी के लघु उपन्यासों में सामाजिक डा0 कमल जैन सिंह एवं सांकृतिक चेतना
12. स्वातंत्रयोत्तर हिन्दी महिला उपन्यास हेमलता खरे लेखिकाओं के मूल्य संक्रमण
13. स्वातंत्रयोत्तर हिन्दी उपन्यासों में जीवन मूल्य डा0 वासुदेव शर्मा

RRIJM 2015, All Rights Reserved